द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:00 -

उनसे न डरो जो शरीर को घात करते हैं पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, वरन् उस से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरकमें नाश कर सकता है। अत प्रत्येकजो मनुष्यों केसम्मुख मुझे स्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है, स्वीकार करूंगा। पर जो मनुष्यों केसम्मुख मुझे अस्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता केसम्मुख, जो स्वर्ग में है, अस्वीकार करूंगा। **(□□□□□ 10:28.32-33)** हे सब थकेऔर बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ। मैं तुम्हें वशि्राम दूंगा। मेर जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकिमैं नम्र और मन में दीन हूं, और तुम अपने मन में वशि्राम पाओगे। क्योंकिमेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है। **(□□□□□**

## **11:28-30)**

मैं तुमसे सच-सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर वशि्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, पर मृत्यु से पार होकर वह जीवन में प्रवेश कर चुका है।

**(□□□□□□□□ 5:24)**

यीशु ने उनसे कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आता है, भूखा नहीं होगा, और वह जो मुझ पर वशि्वास करता है, कभी प्यासा नहीं होगा। परन्तु मैंने तुमसे कहा था कितुमने मुझे देख लिया है पर फिर भी वशि्वास नहीं करते। वह सब जो पिता मुझे देता है, मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा मैं नशि्चय ही उसे न निकालूंगा। क्योंकिमैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा यह है, किसब कुछ जो उसने मुझे दिया है, उसमें से कुछ भी न खोऊं, परन्तु अन्तिम दिन मे उसे जिला उठाऊं। क्योंकिमेरे पिता की इच्छा यह है कि प्रत्येकजो पुत्र को देखता है, और उस पर वशि्वास करता है, वह अनन्त जीवन पाए, और मैं स्वयं अन्तिम दिन में उसे जिला उठाऊंगा।

**(□□□□□□□□ 6:35-40)**

धर्मी पुकारते हैं और यहोवा सुनता है, और उन्हें उनकी सारी विपत्तियों से छुड़ाता है। यहोवा टूटे मन वालों केनिकट रहता है, और पश्चात्तापी आत्मा का उद्धार करता है। धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां आती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सब से छुड़ाता है। वह उसकी हड्डी-हड्डी की रक्षा करता है, और उन में से एक भी टूटने नहीं पाती। दुष्ट दुष्ट को मार डालेगी, और धर्मी केबैरी दोषी ठहरेंगे। यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर छुड़ाता है, और उसकी शरण लेने वालों में से कोई भी दोषी न ठहरेगा। **(□□□ □□□□□□ 34:17-22)**

किसी दूसरे केद्वारा उद्धार नहीं, क्योंकिस्वर्ग केनीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसकेद्वारा हम उद्धार पाएं। **(□□□□□□□□□ □□ □□□ 4:12)**